Part 1

प्रश्न (24) पं0 चन्द्रनाथ मिश्र ' अमर ' जीक साहित्यक परिचय दिअ ।

उतर - पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र ' अमर ' हास्य - व्यंगक कविक रुपमे 1940 ई0 मे मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयलनि , तहियासँ एखन धरि साहित्यक विभिन्न विधामे , नाना प्रकारक रचना करैत आबि रहल छथि । कवि कथाकार ,उपन्यासकार ,एकांकीकार आलोचक , निबंधकार , सम्पादन , अनुसंधानसँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ भरैत आबि रहलाह अछि ।

आचार्य सुरेन्द्र झा ' सुमन ' हिनक सम्पूर्ण व्यक्तिअत्वकेँ एकठाम समेटिक सूत्रवध करैत कहने छथि - गध - पध , नाटक एकांकी , उपन्यास , लघुकथा , व्यंग्य विनोद , निबन्ध , आलोचना , संस्मरण - सर्वेक्षण - साहित्य शतदलक प्रत्येक दल पर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटल । जहिना देखन तहिना वाचन , जहिना सम्पादन - प्रकाशन , तहिना प्रचारण - प्रसारण , जहिना शोध - सधान ,तहिना संग्रह - संकलन - प्रत्येक समकोणक द्विभूज समतूल अछि । ''

एहि मैथिलीक महान सेवकक जन्म मधुबनी जिलाक खोजपुर गाममे 2 मार्च 1925 ई0 केँ भेलनि । अपन पण्डित पिता मुक्तिनाथ मिश्रक सानिध्यमे ई संस्कृत साहित्यक अध्ययंन करैत व्यकरणाचार्य कयलनि । 1947 ई0 मे एम0 एल0 एकेडमी लहेरियासरायमे मैथिलीक शिक्षक भेलाह । ओतयसँ 1983ई मे अवकाश ग्रहण क दरभंगामे रहि रहल छथि । हिनक मुख्य प्रेणास्रोत आचार्य सुमन छ्लथिन्ह । एखन धरि एक दर्जनसँ अधिक पोथी हिनक प्रकाशित अछि । यथा - गुदगुदी , युगचक्र , ऋतुप्रिया , उनटा पाल , आशा दिसा सभ कविता संग्रह समाधान एकांकी ,वीर कन्या आ विदागरी उपन्यास, जलसमाधि कथा संग्रह , मैथिली आंदोलन : एक सर्वेक्षण , , मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास , मैथिली पत्रकारिताक इतिहास आलोचना म0 म0 मुरलीधर झा - जीवन , एच0 एन0 आप्टे - अनुवाद , विजय शंख , कविवर जीवन झा रचनावली सम्पादन , त्रिफला , मुहावरा ओ लोकोभक्ति विविध रचना केलनि ।

श्री अमर स्वतंत्रता आन्दोलन केँ सजग - प्रहरी रहला , मुदा जखन स्वतंत्रता भेटला पर लोकक भ्रष्ट आचरण देखि दुःख होइत छथि त युगचक्रक रचना करैत छथि । जे तत्कालीन समाजक यथार्थ मूल्यांकन अछि । यथा -

हमर कथा कियो कान दैत अछि

जे खोपड़ी छरबा ने सकै छल

से सब उँच मकान दैत अछि

विष्ठी ले दँतखिष्ढी जकरा

जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा

घरक नकलुआ राजनीति - सागरमे

गुड़कान दैत अछि ।

श्री अमर परतंत्र भारतसँ स्वतंत्र भारत धरि समाजक सजग प्रहरी बनि छोट सँ छोट आ पैघ सँ पैघ दोखकेँ देखार करैत आबि रहला अछि । जाहिसँ स्वस्थ समाजक निर्माण हो ।

श्री अमर जी के

जखन मानव मूल्यक अवमूल्यन बुझना जाइत छन्हि त ' मनु संतान '

केँ रचना एहि उदेश्य सँ कैलनि जे लोकमे मानवता जगतैक । यथा -

आइ मनुजता ग्रस्त रोगसँ

करूणा मनुजत्वक वियोगसँ

कानि रहल अछि ह्रदय रोगसँ

छपि रहल अछि भाव गगनकेँ चौदिश तिमिर वितान

चकित मन देखय मनु - सन्तान ।

आई मनुजताक ह्रास भ रहल अछि , परंच मनु सन्तान चकित भ देखि रहल अछि , मुदा निदानक लेल संघर्ष नहि करैत अछि ।

सेवक : एक आत्म परिचय मे आधुनिक कालक नेता आ प्रशासनक लोक सतत् बहुजन हिताय केँ रट लगबैत रहता मुदा कवि केँ जे देखबामे अएलन्हि से देखू -